भजन

तर्ज–कभी रात दिन हम दूर थे

कभी इश्क के दिन रात थे,अब झूठ में गुजरान है
हम इतने कैसे बदल गए,इस बात पे हैरान हैं

1– महबूब आपके नूर की बरसात में भीगा आलम
सुख कायमी में तो सदा,रहते थे आपके पास हम
कभी आप में अलमस्त थे,अब आपसे अन्जान हैं

2– रूह को रूहानी चौन था,हक सूरते दीदार में
वो हमेशगी का मिलाप था,नहीं इंतहा थी प्यार में
कभी दहशते अलगाव था,अब बेअसर जज्बात हैं

3– अरवाहें अर्श अजीम में, रहती हजूर कदम तले
रस इश्क जाम भरे हुए,नजरों से नजरों को मिले
कभी कम लगा मयखाना भी,अब एक जाम की आस है